E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 18-10-2024
Accepted: 27-12-2024

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 1; 2025; Page No. 105-107

शिवानी के कथा साहित्य में मानवीय सरोकार

डॉ. यशवीर दहिया

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, स.के.डी. यूनिवर्सिटी, हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14949331

Corresponding Author: डॉ. यशवीर दहिया

सारांश

शिवानी जी की कथा शैली में मनुष्य जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहरी और सरल दृष्टि प्रस्तुत की जाती है। उनका उद्देश्य श्रोताओं को आत्मज्ञान, मानसिक शांति और जीवन में संतुलन लाने के लिए प्रेरित करना होता है। शिवानी जी की कथा में व्यक्ति के आंतरिक जगत को जागृत करने का प्रयास किया जाता है। वे शांति, प्रेम और आंतरिक संतुलन के महत्व पर जोर देती हैं। उनका मानना है कि जीवन में आने वाली समस्याओं को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। नकारात्मकता से दूर रहकर हम अपनी समस्या का समाधान बेहतर तरीके से ढूंढ सकते हैं। शिवानी जी रिश्तों की अहमियत पर भी प्रकाश डालती हैं। वे बताती हैं कि रिश्तों में प्रेम, समझदारी और विश्वास सबसे महत्वपूर्ण हैं। वे हमेशा यह सिखाती हैं कि हमें सभी इंसानों को समान रूप से देखना चाहिए, चाहे उनकी स्थिति, जाति, धर्म या अन्य कोई भेदभाव क्यों न हो। शिवानी जी यह भी मानती हैं कि मनुष्य को स्वयं पर विश्वास रखना चाहिए और अपने आत्मबल को पहचानना चाहिए, क्योंकि यही हमें जीवन की कठिनाइयों से निपटने में मदद करता है। उनकी कथा में ध्यान और साधना के महत्व को भी बताया गया है। यह व्यक्ति को मानसिक शांति, संतुलन और आंतरिक शांति प्राप्त करने में मदद करती है। इस तरह, शिवानी जी की कथा जीवन के हर पहलू को समझने और जीने की कला को सरल और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करती हैं।

मूल शब्दः शिवानी, मनुष्य जीवन, शांति, प्रेम और आंतरिक संतुलन, मानसिक शांति, संतुलन और आंतरिक

प्रस्तावना

कहानी के निर्माण में यर्थाथ के साथ साथ कल्पना का समावेश शिवानी ने सफलता पूर्वक किया है । स्वयं का नारी होना और नारी की संवेदना को समझना शिवानी अत्यन्त विषद है। जिसमें शिवानी ने नारी की पीड़ा को हर दृष्टिकोण से उभारा है । उन्होने अपनी विशेष शैली के कारण हिन्दी साहित्य जगत में विशेष स्थान रखती है । नारी मन की कोमलता, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं तथा पारिवारिक संबंधों का चित्रण व नारी षोशण को प्रमुखता में अपने साहित्य का विषय बनाया है उनकी प्रत्येक रचना कुछ न कुछ नवीनता लिये हुये है। अपनी कहानियों में वयक्त पारिवारिक परिवेश के उभरते अनेकानेक आयामों का सूक्ष्म दृश्टि से चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में अवैध संतान, अनमेल विवाह, विवाह से पूर्व प्रेम, पति-पत्नी संबंध, विवाह के बाद कुछ परिस्थतियों के कारण पति या पत्नी का का किसी अन्य से प्रेम संबंध, पत्नी का पति के अत्याचारों को झेलते हुए सहनशील बने रहना, माता-पिता द्वारा संतान का अमनोवैज्ञानिक रूप से पालन- पोषण, तनावपूर्ण दाम्पात्य संबंधों का प्रभाव पड़ता है।

अवैध संतान की समस्याओं से सरोकार: अवैध संतान की समस्याएं समाज और परिवार के लिए एक संवेदनशील और

गंभीर विषय हैं। अवैध संतान से संबंधित समस्याएं विभिन्न स्तरों पर प्रभाव डाल सकती है।

अवैध संतान को पारंपरिक रूप से उसके पिता के संपत्ति और संपत्ति के अधिकार नहीं मिलते हैं। इसके कारण कानूनी विवाद उत्पन्न हो सकते हैं, जैसे कि संपत्ति का अधिकार और जीवन यापन के लिए वाजिब अधिकार।

कुत्ते के पिल्ले को पालना कितना सहज है, मनुश्य के दूध मुंहे बच्चे को पालना कितना कठिन है। श्वान शिशु का कुल गोत्र समाज नहीं मानता, उसके जनक का परिचय उसके जीवन के लिये अनिवार्य होता है। किन्तु मानव शिशु के जनक का अभिमान उसकी प्रत्येक श्वास के लिए अनिवार्य हो उठता है।

कली जब बड़ी होती है और उसे पता चलता है कि वह पन्ना की पुत्री नहीं है तो वह विद्रोहणी हो उठती है। प्रवीर को अपनी आत्मकथा सुनाती हुई कहती है कि अम्मा कह रही थी - ‘‘अपने को हूर समझती है, छोकरी।‘‘ क्या पता कोढियों की भीड़ में ही षायद मुझे तेरा कोढी बाप मिल जाये या मैनादेवी के बाहर बैठी कोढीयों की पंगत में तेरी मां।‘‘ [1]. अवैध संतान को अपने पिता या माता के परिवार में कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं होती, जिससे उसे पारिवारिक समर्थन और सुरक्षा में कमी हो सकती है।

सामाजिक सरोकार

शिवानी ने कथा साहित्य में दिखाया है अवैध संतान को अक्सर समाज में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। वह समाज में एक प्रकार के कलंक या तिरस्कार का शिकार हो सकता है, जो उसकी मानसिक स्थिति पर नकारात्मक असर डालता है। ‘‘ गैडा‘‘ की राजमेहरा के मन में पति के बोने व्यक्तित्व को लेकर अनेक कुण्ठाएं है। पति के व्यक्तित्व के कारण वह उसे ‘‘गैंडा‘‘ कहती है। अपनी बेटियों के विशय में सखी को बताते हुये कहती है ‘‘दोनों चुडैले अपने बाप पर पड़ी है। बेटा भी होता तो क्या पता, बाप पर ही पड़ता । एक और गैडे को पृथ्वी पर लाकर करती भी क्या.....। [2].

पारिवारिक असहमति: अवैध संतान के होने से परिवार में तनाव उत्पन्न हो सकता है, विशेषकर जब परिवार के सदस्य इस स्थिति को स्वीकार करने में संकोच करते हैं।

मानसिक और भावनात्मक सरोकार

अवैध संतान को अक्सर अपने अस्तित्व और पहचान के बारे में संदेह हो सकता है। वह खुद को समाज और परिवार से बाहर महसूस कर सकता है, जो उसके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अवैध संतान को कभी-कभी उचित देखभाल और प्यार की कमी हो सकती है, जो उसके भावनात्मक विकास को प्रभावित कर सकती है।

अंतरजातीय विवाह की समस्याएँ: समाज के पारंपरिक ढांचे और दृष्टिकोण के कारण उत्पन्न हो सकती हैं। भारत जैसे देशों में जहां जातिवाद और सामाजिक भेदभाव की गहरी जड़ें हैं, वहां अंतरजातीय विवाह की स्थिति कई जटिलताएँ और चुनौतियाँ पेश कर सकती हैं।

अंतरजातीय विवाह करने वाले जोड़े को समाज में कई बार तिरस्कार और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। पारंपरिक जातिवादी मानसिकता वाले लोग इस प्रकार के विवाह को स्वीकार नहीं करते, जिससे दंपति को मानसिक और सामाजिक पीड़ा का सामना करना पड़ सकता है ‘‘प्रवीर बेटा, अपने समाज की न सही, क्या किसी और समाज की लड़की तुझे पसंद है। अगर ऐसा है, तब भी हमें कोई आपत्ति नहीं है। तेरे मामू का लडका भी तो पिछले साल मेम लाया है। चल, वंष तो चलेगा।‘‘ [3]. सम्पूर्ण कथा साहित्य का अध्ययन करने पर यह बात स्पश्ट होती है कि समाज और परिवार से मिलने वाले नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण, दम्पति को मानसिक तनाव और चिंता का सामना करना पडता है। यह मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

भावनात्मक असुरक्षा और चिंता का होना

अगर माता-पिता के आचरण में असंगति है, जैसे कि वे कभी प्यार और देखभाल करते हैं, तो कभी अवहेलना या उपेक्षा करते हैं, तो बच्चों के मन में यह संशय उत्पन्न हो सकता है परिवार में रहते हुए बच्चे पर माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के आचरण तथा संस्कारों का प्रभाव किसी ना किसी रूप में अवष्य पडता है। कई माता-पिता अपनी संतान का पालन पोशण, बिना उसकी भावनाओं को समझे, अमनोवैज्ञानिक ढंग से करते है जिससे आगे चल कर उनके जीवन में अनेक प्रकार की कुठांए जन्म लेती है और अपनी इन दमित कुठंओं की पूर्ति, वे विद्रोही बन कर अपने कुकत्यों से करते है। ‘‘ तुम्हारे पापा ने तुम्हारी सगाई कर दी है - पहाड़ का ही लडका है, फोरेन सर्विस में है, बाप चोटी के राजनीतिज्ञ है, तुमसे पूछने की उन्होंने कोई जरूरत नहीं समझी। हमारे यहां की लड़की होती तो बाप को इसी बात पर झाड़ कर रख देती। पर तुम्हारे भारत मे शायद लड़की की भावनाओं को अभी भी कोई मान्याता नहीं दी जाती” [4].

जब माता-पिता में आपसी झगड़े, मानसिक तनाव या नकारात्मक व्यवहार हो, तो बच्चे निरंतर चिंता और तनाव महसूस कर सकते हैं। ऐसे बच्चों के मन में यह सवाल उठ सकता है।

आत्मसम्मान की कमी: यदि माता-पिता लगातार बच्चों को आलोचना करते हैं, तिरस्कार करते हैं या उन्हें कम आंकते हैं, तो बच्चों के मन में आत्मसम्मान की कमी हो सकती है।

पारिवारिक संघर्षों का मानसिक स्तर: जब माता-पिता में निरंतर झगड़े होते हैं, तो बच्चों के मन में नकारात्मक विचार उत्पन्न हो सकते है।

सामाजिक संबंधों में संदेह

माता-पिता के आचरण और घर में वातावरण का प्रभाव बच्चों के बाहरी संबंधों पर भी पड़ता है। अगर घर में असंतुलन और तनाव है, तो बच्चे इसे समाज में भी महसूस कर सकते है।

सास बहू की समस्या

अक्सर सास अपनी बहू को स्वतंत्रता देने में संकोच करती हैं, विशेष रूप से जब वह अपनी बहू को अपने घर के फैसलों में हस्तक्षेप करने से रोकती हैं। इससे बहू को यह महसूस हो सकता है कि उसे अपनी स्वतंत्रता और निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। ''बसन्ती की सास ने भी पहले बसन्ती को खूब प्यार दूलार दिया पर जब दो माह बाद ही उसका पति धरणीधर उसे अपने साथ ले जाना चाहता है तो वही सास उस बहू पर बरस पडती है....। इस बात का वर्णन करती हुई बसन्ती अहिल्या से कहती है... '' अम्मा ठीक ही तो कहती थी कि नई-नई बहू से सास और ससुराल की प्रशंसा सुनकर कोई भी मां आश्वस्त नहीं होती ।'' [5].

अर्थिक सबंधों से उत्पन्न समस्याएं: घर में गरीबी के कारण काफी समस्याओं का सामना करना पडता है जैसे ''मायापुरी'' शिवानी का एक अत्यन्त मार्मिक उपन्यास है। जिसमें पारिवारिक संबंधों की आधार भूमी आर्थिक समस्या है। सतिष के पिता की दयानीय आर्थिक स्थिति का लाभ उठा तिवारी जी ने उनका सारा ऋण माफ कर दिया और अपनी पूत्री का विवाह सतीश से करना चाहते है। सतीश बाद में सविता से विवाह नहीं करना चाहता पर अपनी महत्वाकांक्षी मां तथा पिता के ऋण के लिए जीवन भर के लिये तिवारीजी की हाथ की कठपुतली बन जाता है। इस आर्थिक समस्या के कारण सतिष का जीवन दुःखमय बन जाता है''। [6]. कई बार आर्थिक परिस्थितियां भी कुछ भी करवा सकती है। ''सुरंगमा को भी मां की ही तरह आर्थिक परिस्थितियों का सामना करना पडता है। मां की बीमारी और अकर्मण्य शराबी पिता के कारण सुरंगमा एक बैंक में नौकरी करती है। धन के लिए उसे मंत्री दिनकर की पुत्री के ''टयूटर'' के रूप में भी काम करना पडता है।'' [7]. व्यक्ति जब कर्ज के नीचे दब जाता है तो उसे अपना सब कुछ बेचना भी पड़ जाता है । '' पति का कर्जा चुकाने के लिए भगवती को मोटर-कोठी सभी कुछ बेचना पडता है। अब तो उस परिवार के लिए वैभव की स्मृतियां ही षेश रह गई थी। भगवती को अपने भाई भाभी के पास शरण लेनी पड़ी । चम्पा व मां को अपने जीवन यापन के लिए नौकरी का आश्रय लेना पडा''। [8].

निष्कर्ष

शिवानी के कथा साहित्य में पारिवारिक समस्ओं के संदर्भ में हम इस निश्कर्श पर पहुंचते है कि शिवानी का अधिकांश कथा साहित्य समस्या मूलक है इसमें कोई संदेह नहीं कि जब तक साहित्य, चाहे वह किसी भी भाषा का क्यों न हो, अपने सांस्कृतिक जीवन की जटिलता और ज्वलंत सामाजिक प्रश्नों के नुकीले तेवरों को मुखरित नहीं करता तब तक चाहे वह सरस, लोकप्रिय मनोरंजक भले ही सिद्ध हो जाये किन्तु सार्थक एवं दीर्घ जीवी कभी नहीं कहा जा सकता । प्रत्येक साहित्य कार अपनी रचनाओं में अपने युग और समाज का प्रतिबिम्ब चित्रित करता है। समाज की उपेक्षा करके कोई भी साहित्यकार पाठकों की दृष्टि में खरा नहीं उतर सकता । यदि किसी साहित्यकार की रचना किसी कल्पनालोक से संबंधित है तो वह पाठकों की दृश्टि में इसलिये खरी नहीं उतरती क्योंकि आज का पाठक चिंतन की दृष्टि से सजग और सचेत है।

संदर्भ

1. चार दिन की - शिवानी
2. कृष्ण कली - शिवानी
3. सुरंगमा-शिवानी
4. गैंडा - शिवानी
5. कृष्ण कली - शिवानी
6. चौदहफेरे- शिवानी
7. चौदहफेरे - शिवानी
8. चौदहफेरे - शिवानी

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.